Blessings

जयन्तु वितरागाः
श्री आत्म-वल्लभ-समुद्र सद्गुरुभ्यो नमः

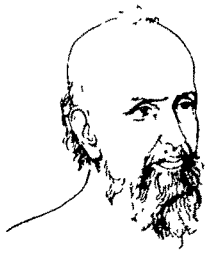

विजय इन्द्रदिन्न सूरि

शेठ मोतिशा रिलिजियस अँन्ड चॅरिटेबल ट्रस्ट
शेठ मोतिशा आदेशरजी जैन मंदिर
२७, लव लेन (मोतिशा लेन)
भायखला, मुंबई ४०० ०२७
फोन न.: ३७२०४६१, ३७१०७९२

आशिर्वचन ता. २३ ३ ०७

ज्ञानम् विवादाय धनम् मदाय शक्तिः परेषाम् परिपीडनाय।
खलस्य साधोः विपरीतम् एतत् ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥१॥
ज्ञान शक्ति, धन शक्ति शारीरिक शक्ति ए तीन शक्तियाँ प्रत्येक मनुष्योंको मिली है। उसमें तीनों शक्तिओं सज्जनों सत् उपयोग मे लगाते हैं और दुर्जन पुरुषों दुरुपयोग में लगाते हैं। ज्ञानसे वाद विवाद में पडकर सबके साथ लडना झगडना वैसे कामोंमें अपनी शक्ति लगानेसे ज्ञान तारनेवालेका काम नहीं करता है परन्तु सदुपयोग करे वे ज्ञान तारने वाला है दुरुपयोग करे तो ज्ञान डुबाने वाला भी बनता है।
धनसे दिन दुखियोंका उद्धार का काम कर शकते हैं जैसे तिर्थंकरोंने वार्षिदान देकर सारे जगत मात्र का उद्धार किया हुआ प्रत्येक तीर्थंकरोंने ३ अरब ८८ क्रोड ८० लाख सोना महोरका दान दिया और जो मागें वे प्रभुने दिया हाथीकी इच्छासे आया हाथी दे दिया हारकी इच्छासे आया हारबने क्रुनी सोना महोरें दे दि वैसे आत्मधन-आत्मिक धन ज्ञान, दर्शन और चारित्र उनको स्वपरको इस्तेमाल करता है तब आत्मिक धन भी तारने वाला बनता है।
शारिरिक धन मानते शरीरकी शक्तिके द्वारा मारना पीडना। वैरता कराना कर्मबन्धन होता है परन्तु ज्ञान ध्यान तपस्याद्वारा शारिरिक शक्तिका उपयोग होता है वैसे ही साध्वीश्री किरणयशाश्रीजी संयम लेकर गुरुदेवोको वफादार रहकर गुरुदेवोंका जिवनपर किताब लिखकर अपनी शक्ति ज्ञान ध्यान, तप साधना में लगाकर जिवन उज्वल बनाया है और पुस्तककी रचनामें अपना समय लगाकर गुरु गुणोंगाकर सिद्धि चडी की ए मैं सार्थक मानता हूँ

आचार्य विजय इन्द्रदिन्नसूरिका अनुवंदना
सुखशाता